

जागीरदार पुं. (फा.) जागीर का मालिक।

जागीरदारी स्त्री. (फा.) दे. जागीरी।

जागीरी स्त्री. (फा.) जागीर के रूप में प्राप्त मिलकियत।

जागुड़ पुं. (तत्.) 1. केसर 2. प्राचीन देश का नाम तथा उसका निवासी।

जागृति स्त्री. (तत्.) दे. जागरण।

जाग्रत वि. (तत्.) 1. वह अवस्था जिसमें शब्द, स्पर्श आदि का परिज्ञान हो 2. जो जागा हुआ है।

जाग्रति स्त्री. (तत्.) जागरण, जागने की क्रिया।

जाघनी स्त्री. (तत्.) 1. जाँघ, जंघा 2. पूँछ।

जाचक पुं. (देश.) माँगने वाला, भिखारी, भिक्षुक।

जाचकता स्त्री. (देश.) माँगने का भाव, भीख माँगने की क्रिया।

जाचना स.क्रि. (तत्.) याचना, माँगना।

जाजरा वि. (तद्.) जर्जर, जीर्ण।

जाजरी पुं. (देश.) बहेलिया, चिड़ीमार।

जाजिम स्त्री. (तुर्की) 1. एक प्रकार की छपी हुई भारी चादर जो फर्श पर बिछाई जाती है 2. गलीचा, कालीन।

जाजी पुं. (तद्.) योद्धा, वीर।

जाज्वल्य वि. (तत्.) 1. प्रज्वलित, प्रकाशयुक्त 2. तेजवान।

जाज्वल्यमान पुं. (तत्.) 1. प्रज्वलित, दीप्तिमान 2. तेजस्वी, तेजवान।

जाट पुं. (देश.) कृषि कार्य करने वाली एक प्रसिद्ध जाति जो पंजाब, सिंध, राजस्थान और उत्तर प्रदेश में फैली हुई है।

जाटलि स्त्री. (तत्.) पलाश की जाति का एक पेड़-मोरवा या झाटलि।

जाटू पुं. (देश.) हिसार, करनाल और रोहतक के जाटों की बोली, इसे हरियाणवी या बांगरु भी कहते हैं।

जाठ पुं. (देश.) 1. लकड़ी का मोटा और ऊँचा लट्ठा जो कोल्हू में पेरने के काम आता है 2. तालाब आदि के बीच गड़ा हुआ लट्ठा।

जाठर पुं. (तत्.) 1. पेट, उदर 2. पेट की वह अग्नि जिससे खाया हुआ अन्न पचता है, जठराग्नि 3. भूखा।

जाठराग्नि पुं. (तत्.) दे. जठराग्नि।

जाठरानल पुं. (तत्.) दे. जाठराग्नि।

जाड़ा पुं. (तद्.) शीतकाल, सर्दी का मौसम।

जाइय पुं. (तत्.) 1. जड़ का भाव 2. जीभ का कुंठित होना 3. स्वाद ग्रहण न करना।

जाइयारि पुं. (तत्.) जंबीरी नींबू।

जात पुं. (तत्.) 1. जन्म 2. पुत्र, बेटा 3. जीव, प्राणी 4. वर्ग-श्रेणी वि. 5. उत्पन्न 6. जन्मजात 7. प्रशस्त 8. जिसमें जन्म ग्रहण किया हो 9. शरीर, देह, काया 10. कुल वंश 11. व्यक्तित्व 12. जाति 13. अस्तित्व।

जातक वि. (तत्.) 1. पैदा हुआ, उत्पन्न पुं. 2. बच्चा 3. भिक्षु 4. एक प्रकार की बौद्ध कथा जिसमें भगवान बुद्ध के पूर्वजन्मों का विवरण, बात होती है 5. जातकर्म संस्कार जैसे- जातक चक्र-नवजात शिशु के शुभाशुभ ग्रहों की स्थिति का बोधक चक्र (देश.) हींग का पेड़।

जातकर्म पुं. (तत्.) हिंदुओं में एक संस्कार जो बालक के जन्म के समय होता है।

जाति स्त्री. (तत्.) 1. हिंदुओं में समाज का वह विभाग जो पहले कर्मानुसार होता था, अब जन्मानुसार हो गया है जैसे ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि जातियाँ 2. मनुष्य समाज का एक विभाग जो निवास स्थान, वंश परंपरा या गुण, धर्म, आकार की समानता के आधार पर किया जाता है 3. वर्ण 4. कुल 5. वंश 6. गोत्र 7. सामान्य 8. जावित्री 9. जायफल 10. मात्रिक छंद स्त्री. (तद्.) 1. चमेली, आमलकी 3. माली 4. जायफल।

जाति कोश पुं. (तत्.) जायफल।

जाति च्युत वि. (तत्.) जाति से निकाला हुआ।